राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोक देवता

☛ निम्न में से कौन राजस्थान के पंचपीरों में सम्मिलित नहीं है?
(1) रामदेवजी (2) हडबूजी
(3) मेहाजी (4) तेजाजी (4)

व्याख्या– पांच पीर–पाबूजी, हड़बू जी, रामदेवजी, मांगलिया मेहाजी, गोगाजी।

☛ निम्न में से किस तिथि को गोगानवमी मनाई जाती है?
(1) भाद्रपद शुक्ल नवमी (2) भाद्रपद कृष्ण नवमी
(3) कार्तिक शुक्ला नवमी (4) कार्तिक कृष्ण नवमी (2)

☛ किस लोकदेवता को ''जाहर पीर'' के नाम से पूजने पर सर्पदंश का विष प्रभावहीन हो जाता है।
(1) रामदेवजी (2) मेहाजी
(3) गोगाजी (4) पाबूजी (3)

व्याख्या– पिता–जेवर, माता–बाछल,
उपनाम–सांपो के देवता–जन्म–ददरेवा (चूरू)
गुरु–गोरखनाथ।

☛ महमूद गजनवी से युद्ध लड़ने वाले लोकदेवता कौन थे?
(1) रामदेवजी (2) गोगाजी
(3) हडबूजी (4) पाबूजी (2)

व्याख्या–गोगाजी अपने मौसेरे भाइयों अरजन–सुर्जन के साथ लड़ते हुए मारे गये।

☛ लोकदेवता गोगाजी के बारे में सत्य कथन बताइये–
(1) इन्हें हिन्दू 'नागराज' व मुस्लिम 'गोगा पीर' के रूप में मानते हैं।
(2) गोगाजी का मंदिर मकबरा शैली में बना हुआ है, मंदिर में बिस्मिल्लाह लिखा हुआ है।
(3) गोगाजी की ओल्डी सांचौर (जालोर) में स्थित है।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–चुरु में गोगाजी का मंदिर ''शीर्षमेड़ी'' व नोहर हनुमानगढ़ में ''धूरमेड़ी'' कहलाता है, जो इनका समाधि स्थल है।
- गोगाजी की पूजा भाला लिये अश्वरोही अथवा सर्प के प्रतीक रूप में की जाती है।

☛ गोगाजी के पत्थर पर उत्कीर्ण सर्प मूर्तियुक्त पूजा स्थल गांवों में किस वृक्ष के नीचे होते है?
(1) नीम (2) खेजड़ी
(3) पीपल (4) बिल्व पत्र (2)

☛ किस लोकदेवता ने गायों को बचाने हेतु अपने प्राणों का त्याग किया?
(1) पाबूजी (2) गोगाजी
(3) तेजाजी (4) उपर्युक्त सभी (4)

☛ तेजाजी का जन्म कहाँ हुआ?
(1) खरनाल (नागौर) (2) कोलू (जोधपुर)
(3) आसीन्द (भीलवाड़ा) (4) ददरेवा (चूरू) (1)

व्याख्या–
- पिता–ताहड़जी, माता–रामकुंवरी
- पत्नी–पेमल
- मृत्यु–सुरसुरा अजमेर, सर्पदंश के कारण
- ससुराल–पनेर

☛ तेजाजी का मुख्य मंदिर कहाँ बना हुआ है?
(1) खरनाल (2) परबतसर
(3) सुरसुरा (4) आसीन्द (2)

व्याख्या–तेजाजी का मेला भाद्रपद शुक्ल दशमी को लगता है। इसी दिन मृत्यु हुई।

☛ लाछा गूजरी की गायों को मेर लोगों द्वारा चुरा लेने पर लाछा गूजरी की प्रार्थना पर किसने इन्हें मुक्त कराया?
(1) तेजाजी (2) पाबूजी
(3) हडबूजी (4) रामदेवजी (1)

☛ ''सांपों के रक्षक'' व ''कालाबाला का देवता'' उपनाम से जाने गये–
(1) गोगाजी (2) तेजाजी
(3) हडबूजी (4) रामदेवजी (2)

व्याख्या–तेजाजी को तलवार धारण किये योद्धा (घोड़े पर सवार) के रूप में दर्शाया जाता है, जिनकी जिह्वा पर सर्प डंस रहा है। सर्प दंशित व्यक्ति के दायें पैर पर तेजाजी की तांत (डोरी) बांधने पर विष नहीं चढ़ने की मान्यता है।
- स्रोत : RBSE कक्षा–10वीं राजस्थान अध्ययन पुस्तक

☛ देवनारायणजी का मुख्य मंदिर कहाँ स्थित है?
(1) रामदेवरा (2) आसींद
(3) सांचौर (4) बैंगटी (2)

व्याख्या–(देवनारायण जी का मेला–भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को लगता है।)

☛ वे लोकदेवता जिनकी फड़ व जिन पर स्वयं भी डाक टिकट जारी हुआ है?
(1) पाबूजी (2) तेजाजी
(3) देवनारायणजी (4) हड़बूजी (3)

व्याख्या–देवनारायणजी की फड़ हर रात तीन पहर गाये जाने पर छः माह में पूर्ण होती है।

☛ देवनारायणजी के संबंध में सत्य कथन कौनसा है?
(1) इनका जन्म 1242 ई. में, सवाई भोज व सेदू गुर्जर के घर हुआ।
(2) इनकी फड़ में जंतर वाद्य यंत्र बजाया जाता है।
(3) इनके मंदिर में मूर्ति नहीं होती बल्कि ईंटों की पूजा की जाती है व मंदिर में नीम के पत्ते चढ़ाये जाते हैं।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–राजस्थान की सबसे बड़ी फड़ देवनारायणजी की है।

☛ गूर्जर जाति के लोग देवनारायण जी को किस देवता का अवतार मानते है?
(1) विष्णु (2) राम
(3) शिव (4) हनुमान (1)

व्याख्या–इनके पिता की मृत्यु भिनाय के शासक के संघर्ष के दौरान हुई। इन्होंने धारा नगरी के जयसिंह देव परमार की पुत्री पीपलदे से विवाह किया। इनके मुख्य अनुयायी गुर्जर होते है।

☛ फिरोज तुगलतक के मालवा में नियुक्त सूबेदार निजामुद्दीन की सेना को किस लोकदेवता ने पराजित किया?
(1) मल्लीनाथ जी (2) रामदेवजी
(3) तल्लीनाथ जी (4) हडबूजी (1)

व्याख्या–इनका जन्म मारवाड़ के रावल सलखा और जाणीदे के यहाँ 1358 ई. में हुआ। इनके चाचा कान्हड़देव की मृत्यु के बाद 1374 में ये महेवा के शासक बने। इसी दरम्याम फिरोजशाह तुगलक के सूबेदार निजामुद्दीन को पराजित किया।

☛ अपनी रानी रूपादे की प्रेरणा से 1389 ई. में उगमसी भाटी के शिष्य कौन बन गये थे?
(1) रामदेवजी (2) देवनारायणजी
(3) मल्लीनाथ जी (4) हडबूजी (3)

व्याख्या–ये भविष्यदृष्टा व चमत्कारी सिद्ध पुरुष थे। 1399 में इन्होंने मारवाड़ के सारे संतों को एकत्र कर वृहद हरि कीर्तन का आयोजन करवाया। इनकी मृत्यु चैत्र शुक्ला द्वितीया को हुई।

☛ तिलवाड़ा (बालोतरा) में किस लोकदेवता की स्मृति में प्रसिद्ध पशुमेला भरता है?
(1) देवनारायणजी (2) मल्लीनाथ जी
(3) तल्लीनाथ जी (4) मेहाजी (2)

व्याख्या–मल्लीनाथजी का वास्तविक नाम गांगदेव राठौड़ था। लूणी नदी के किनारे तिलवाड़ा में चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी तक राजस्थान का सबसे प्राचीन पशुमेला भरता है। जोधपुर के पश्चिमी परगने का नाम इन्हीं के नाम पर मालाणी पड़ा जो वर्तमान में बालोतरा में है।

☛ रामदेवजी का मेला कब लगता है?
(1) भाद्रपद शुक्ल द्वितीया (2) भाद्रपद शुक्ल दशमी
(3) भाद्रपद कृष्ण दशमी (4) भाद्रपद शुक्ल सप्तमी (1)

व्याख्या–
- जन्म–ऊँडूकासमेर (बाड़मेर)
- पिता–अजमालजी, माता–मीणादे,
- पत्नी–नेतलदे, वंश–तंवर राजपूत (अमरकोट के दलजी सोढ़ा की पुत्री)

☛ तेरहताली नृत्य का संबंध किस लोक देवता के मेले से है?
(1) रामदेवजी (2) मल्लीनाथ जी
(3) तल्लीनाथ जी (4) हडबूजी (1)

व्याख्या–
- रामदेवजी का झण्डा – नेजा,
- घोड़े का नाम – लीला घोड़ा, जागरण–जम्मा

☛ कामडिया पंथ की स्थापना किसने की?
(1) रामदेवजी ने (2) पाबूजी
(3) गोगाजी ने (4) देवनारायणजी (1)

व्याख्या–रामदेवजी का प्रतीक चिन्ह–पगलीये।

☛ रामदेवजी को किसका अवतार माना जाता है?
(1) श्रीकृष्ण (2) विष्णु
(3) शिव (4) लक्ष्मण (1)

व्याख्या–इन्होंने 1458 में भाद्रपद शुक्ल एकादशी को जीवित समाधि ली। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ चौबीस वाणिया था।

☛ दर्जी समाज के आराध्य देव संत पीपाजी का मंदिर कहा है?

(1) जोधपुर (2) जयपुर
(3) बाड़मेर (4) बीकानेर (3)

व्याख्या–संत पीपाजी का मुख्य मंदिर समदड़ी (बाड़मेर) में है। जहाँ चैत्र पूर्णिमा का मेला भरता है।

- समदड़ी के अलावा गागरोन (झालावाड़) व मसुरिया (जोधपुर) में संत पीपाजी का मेला भरता है।

☛ संत पीपाजी के संबंध में कौनसा कथन सत्य है?

(1) इनका वास्तविक नाम प्रताप सिंह खींची था।
(2) यह गागरोन के राजा थे एवं गागरोन में इनकी छतरी बनी हुई है।
(3) टोड़ा (टोंक) में इनकी गुफा बनी हुई है।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–संत पीपाजी का जन्म 1425 ई. में चैत्र पूर्णिमा को गागरोन में हुआ। इनके बचपन का नाम प्रताप सिंह खींची था।

- संत पीपाजी दर्जी समाज के आराध्य देव माने जाते हैं।
- चिंतावाणी संत पीपाजी की रचना है। संत पीपाजी के भजनों का संग्रह गुरु ग्रंथ साहिब में भी मिलता हैं।
- संत पीपा की छतरी काली सिंध नदी के किनारे गागरोन में है।
- टोंक के शासक शूरसेन को अपना शिष्य बनाया।
- इनके गुरू रामानंद जी थे।

☛ जांभोजी का जन्म कहाँ हुआ?

(1) पीपासर (2) मुकाम
(3) बापिणी (4) बैंगठी (1)

व्याख्या–जाम्भोजी का जन्म पीपासर (नागौर) में भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ। इनके बचपन का नाम धनराज था।

जाम्भोजी ने 1485 में समराथल (बीकानेर) में विश्नोई संप्रदाय की स्थापना की।

☛ विश्नोई संप्रदाय के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर के संबंध में कौनसा कथन सत्य है?

(1) विश्नोई संप्रदाय के आराध्य जाम्भोजी की समाधि (मुकाम) बीकानेर में है।
(2) इनका जन्म 1451 में पंवार वंशीय लोहट जी व हंसादेवी के घर हुआ।
(3) 1536 ई. में लालासर गाँव मुकाम में अपना नश्वर शरीर त्याग दिया।
(4) उपरोक्त सभी (4)

व्याख्या–जाम्भोजी को गहला गूंगा, पर्यावरण वैज्ञानिक, कृष्णावतार, विष्णु का अवतार भी कहा जाता है।

- जाम्भोजी के उपदेश स्थल साथरी कहलाते है।
- जांभोजी के ग्रंथ जंभ संहिता, जम्भ सागर शब्दावली, विश्नोई धर्म प्रकाश व जम्भसागर आदि।

☛ बीकानेर के राव लूणकरण को राजपद पाने का वरदान किसने दिया?

(1) जाम्भोजी (2) धन्नाजी
(3) जसनाथजी (4) पीपाजी (3)

व्याख्या–जसनाथजी का जन्म 1482 ई. में कार्तिक शुक्ल ग्यारस को कतरियासर (बीकानेर) में हुआ था। इन्होंने 1504 ई. में कतरियासर में जसनाथी संप्रदाय की स्थापना की।

☛ जसनाथजी के संबंध में कौनसा कथन सत्य है–

(1) कतरियासर में जसनाथजी का विशाल मेला आश्विन शुक्ल सप्तमी, माघ शुक्ल सप्तमी, चैत्र शुक्ल सप्तमी को लगता है।
(2) इनके उपदेश सिंभूदडा व कोडा नामक ग्रंथ में संग्रहित है।
(3) इन्होंने लोह पांगल नामक तांत्रिक का घमण्ड चकनाचूर किया।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–इनके पिता हम्मीर जी जाणी जाट व माता रूपादे थी।

☛ मालासर, पांचला, बम्बूल आदि किस सम्प्रदाय से सम्बन्धित उपपीठ है?

(1) विश्नोई संप्रदाय (2) जसनाथी संप्रदाय
(3) नाथ संप्रदाय (4) रामस्नेही संप्रदाय (2)

व्याख्या–जसनाथी संप्रदाय की पाँच उप पीठ है।

1. मालासर, 2. लिखमादेसर, 3. पुनरासर, 4. बम्बूल तथा 5. पांचला

- जसनाथजी के समकालीन दिल्ली का शासक सिकंदर लोदी था। लालनाथ, चोखनाथ, सवाईनाथ, रूस्तमजी जसनाथी संप्रदाय के प्रमुख संत थे।

☛ अग्नि नृत्य का संबंध किस संप्रदाय से है?

(1) विश्नोई संप्रदाय (2) रामस्नेही संप्रदाय
(3) जसनाथी संप्रदाय (4) नाथ संप्रदाय (3)

व्याख्या–जसनाथी संप्रदाय के अनुयायी अग्नि नृत्य करते हैं।

- नृत्य के दौरान फतेह फतेह का उच्चारण करते हैं, बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने अग्नि नृत्य को सर्वाधिक संरक्षण प्रदान किया था।

परीक्षा दृष्टि

★ राम सा पीर के नाम से प्रसिद्ध सन्त का सही नाम क्या है– – बाबा रामदेव

★ आशापुरा माता किस वंश की कुलदेवी है– – चौहान

★ तेजाजी ने लाछां गूजरी की गायें किससे छुड़ाने के लिए अपने जीवन की आहूति दी– – मेर के मीणाओं से

★ गोगामेड़ी (शीर्षमेड़ी) कहाँ स्थित है – ददरेवा (चूरू)

★ पाबूजी को अवतार माना जाता है– – लक्ष्मण का

★ जैसलमेर के भाटी शासकों की कुल देवी है– – स्वांगिया माता

★ राजस्थान में ऊँटों के देवता के रूप में किसकी पूजा की जाती है– – पाबूजी राठौड़

★ प्लेग रक्षक देवता के रूप में प्रसिद्ध है– – पाबूजी

★ एकमात्र लोक देवता जो कवि भी थे– – रामदेवजी

★ वीर तेजाजी की घोड़ी का नाम है– – लीलण

★ किस लोक देवता के मंदिर की बनावट मकबरानुमा है – गोगाजी

★ लोक देवता तेजाजी का जन्म स्थान है– – खरनाल (नागौर)

★ लोक देवता पाबूजी के जीवन दर्शन पर लिखी किताब के लेखक हैं– – आशिया मोड़जी (पाबू प्रकाश)

★ बाबा रामदेवजी की माता का नाम है– – मेणादे

★ आवरी माता का मंदिर है– – निकुम्भ (चित्तौड़)

★ स्वांगिया माता किस क्षेत्र के शासकों की कुल देवी थी– – जैसलमेर

★ सच्चिया माता कुल देवी है– – ओसवालों की

★ कंठेसरी माता किसकी लोकदेवी मानी जाती है– – आदिवासियों की

★ कौनसे लोकदेवता नागौर परगने के खड़ताल गाँव के रहने वाले थे– – तेजाजी

★ राजस्थान का वह लोक देवता जिसका सम्बन्ध गागरोण से था– – संत पीपाजी

★ लोक देवता रामदेवजी का वाहन कौनसा है– – घोड़ा

★ दादू पंथ की नागा शाखा के प्रवर्तक –सुंदरदासजी

☛ **तेजाजी दशमी के अवसर पर पंचमी से पूर्णिमा तक विशाल पशु मेला कहाँ लगता है?**

(1) सुरसुरा
(2) खरनाल
(3) पनेर
(4) परबतसर (4)

☛ **जींदराव खींची से देवल चारणी की गायों को बचाने हेतु किसने युद्ध किया?**

(1) पाबूजी (2) तेजाजी
(3) मेहाजी (4) रामदेवजी (1)

व्याख्या–इनमें बहनोई जींदराव खींची ने देवल चारणी की गाये चुराई थी। इन्हें छुड़ाने हेतु पाबुजी तीन फेरे लेने के पश्चात् चौथे फेरे में रवाना हुए। 1276 ई. में हुए संघर्ष में पाबुजी शहीद हुए।

☛ **पाबूजी का जन्म कहाँ हुआ था?**

(1) खरनाल (नागौर) (2) कोलू (जोधपुर)
(3) ब्यावर (अजमेर) (4) आसीन्द (भीलवाड़ा) (2)

व्याख्या–**पिता**–धान्धल जी राठौड़, **पत्नी**–सुपियारदे,
• घोड़ी–केसर कालमी, लक्ष्मण के अवतार, जन्म–1239

☛ **राजस्थान के किस लोकदेवता को "ऊँटों के देवता" के रूप में जाना जाता है?**

(1) पाबूजी (2) तेजाजी
(3) हड़बूजी (4) रामदेवजी (1)

व्याख्या–पाबूजी के शिष्य मुख्यत: रेबारी जाति के हैं।

☛ **पाबूजी के बारे में असत्य कथन बताइये–**

(1) पाबूजी के पवाडे माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
(2) इनका विवाह अमरकोट के सूरजमल सोढ़ा की पुत्री फूलमदे/सुपियारदे के साथ हुआ।
(3) इनका प्रतीक चिन्ह हाथ में भाला लिए अश्वारोही के रूप में प्रचलित है।
(4) इनमें से कोई नहीं (4)

☛ **पाबुजी का मेला कौन-से माह में भरता है?**

(1) ज्येष्ठ (2) चैत्र
(3) आषाढ़ (4) फाल्गुन (2)

व्याख्या–तिलवाड़ा पशु मेला भी चैत्र में लगता है। राजस्थान में सर्वप्रथम ऊँट लाने का श्रेय पाबुजी को जाता है। ऊँट के बीमार होन पर पाबुजी की फड़ का वाचन किया जाता है।

☛ **इतिहासकार मुहणौत नैणसी, महाकवि मोडजी आशिया के अनुसार किस लोक देवता का जन्म बाड़मेर में आठ कोस आगे खारी खाबड़ के जूना नामक गाँव में अप्सरा के गर्भ में हुआ?**

(1) पाबूजी (2) मेहाजी
(3) तेजाजी (4) गोगाजी (1)

☛ **भादरवे री अंधारी आठम ने जोधपुर रा बापणी माय किस्या लोक देवता रो मेलो भरिजे?**

(1) रामदेवजी का (2) हडबूजी का
(3) गोगाजी का (4) मेहाजी का (4)

व्याख्या–राव चुंडा के समकालीन थे।

- जैसलमेर की रणगदेव भाटी से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- इनका जन्म पंवार क्षत्रिय राजपूत परिवार में हुआ लेकिन लालन-पालन ननिहाल में मांगलिया गौत्र में होने के कारण मेहाजी मांगलिया कहलाए।

☛ **किस लोकदेवता के आशीर्वाद से राव जोधा ने मेवाड़ से जीतकर मंडोर पर पुनः अधिकार किया?**

(1) मेहाजी के (2) हडबूजी के
(3) रामदेवजी के (4) पाबूजी के (2)

व्याख्या–इनका जन्म नागौर के मेहराज सांखला के घर हुआ। पिता की मृत्यु के बाद ये भूडेल छोड़कर हरभमजाल में रहने लगे। राव जोधा ने इन्हें बेंगटी गाँव प्रदान किया।

☛ **किसे शकुन शास्त्री, वचन सिद्ध और चमत्कारी महापुरुष माना जाता था?**

(1) रामदेवजी को (2) पाबूजी को
(3) हडबूजी को (4) मेहाजी को (3)

व्याख्या–जन्म-भूडेल नागौर, गुरु बालीनाथजी।

☛ **हरभूजी का वाहन किसे माना जाता है?**

(1) सिया (2) घोड़ा
(3) गधा (4) घोड़ी (1)

व्याख्या–प्रमुख स्थान बेगंटी गाँव फलोदी है। हड़बू जी की सवारी इनकी बैलगाड़ी है, जिसे सिया कहा जाता है।

☛ **अकबर के विरूद्ध चित्तौड़गढ़ आक्रमण के समय कौनसे लोक देवता युद्ध करते हुए मारे गये?**

(1) वीर कल्ला जी (2) वीर बिग्गाजी
(3) हडबूजी (4) वीर मल्लीनाथजी (1)

☛ **किस लोक देवता की ख्याति चार हाथ वाले देवता के रूप में हुई?**

(1) पाबूजी (2) मेहाजी
(3) वीर कल्ला जी (4) रामदेवजी (3)

व्याख्या–सिर कटने के बाद भी कल्लाजी का धड़ मुगलों से लड़ता हुआ रूण्डेला तक जा पहुंचा।

परीक्षा दृष्टि

★ राजस्थान के लोक देवता हड़बू जी का जन्म हुआ? – नागौर
★ स्थान जहाँ गोगाजी का जन्म हुआ, वह है? – ददरेवा
★ लटियाल देवी का मंदिर स्थित है? – फलौदी
★ लोक देवता तेजाजी महाराज का पवित्र तीर्थ स्थल 'बाँसी दुगारी' कहाँ स्थित है– – बूँदी
★ लोक देवता भर्तृहरि मेला कब लगता है– भाद्रपद शुक्ल अष्टमी
★ मीरा ने अपना अंतिम समय किस स्थान पर बिताया – द्वारिका
★ प्रमुख लोक देवता जिसने जीवित समाधि ली – रामदेवजी
★ खण्डित प्रतिमा के रूप में किस देवी की पूजा की जाती है – शीतला देवी
★ राजस्थान का हरिद्वार कौनसा तीर्थ है – मातृकुण्डिया
★ गलता तीर्थ पर स्थित मंदिर किस देवता को समर्पित है – सूर्य
★ लोक देवता जांभोजी का जन्म स्थल है – पीपासर
★ राजस्थान में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लोक देवता माने जाते हैं – तेजाजी
★ जोधपुर के राठौड़ों की कुल देवी, जिसकी 18 भुजायें है – नागणेची माता
★ 'भूरिया बाबा' आराध्य देवता है– – गोडवाड़ के मीणाओं के
★ 'संन्यासियों के सुल्तान' के उपनाम से किसे जाना जाता है– – हमीदुद्दीन नागौरी
★ सुंधा माता का मंदिर स्थित है– – जालौर
★ लोक देवी 'जोगीमाता' मंदिर स्थित है– – सीकर
★ लोक देवता 'तेजाजी' को कहाँ के मेले में याद किया जाता है – परबतसर
★ जीणमाता कौनसे राजपूत वंश की कुल देवी है– – चौहान वंश

☛ **राजस्थान में धार्मिक आंदोलनों को श्रीगणेश करने वाले संत धन्ना का जन्म कहाँ हुआ?**

(1) ब्यावर (अजमेर) (2) धुवन (टोंक)
(3) मेड़ता (नागौर) (4) आसीन्द (भीलवाड़ा) (2)

व्याख्या–संत धन्नाजी का जन्म धुवन गाँव टोंक में हुआ था। संत धन्नाजी के गुरु का नाम रामानन्दजी था।

- राजस्थान में धार्मिक आंदोलन का श्री गणेश का श्रेय संत धन्ना को ही जाता है।
- धन्नाजी द्वारा रचित पदों को 'धन्नाजी की आरती' कहा जाता है। ये निर्गुण उपासक थे।

☛ **बीकानेर के गोरखमालिया में 12 वर्ष तक कठोर तपस्या व सभी जीवों पर दया करने का संदेश किसने दिया?**

(1) जसनाथजी ने
(2) जांभोजी ने
(3) पीपा जी ने
(4) हरिरामदास जी ने (1)

व्याख्या–जसनाथ जी ने राव लूणकरण को बीकानेर का शासक बनने का वरदान दिया। इनके समकालीन सिंकदर लोदी ने इन्हें कतरियासर के पास भूमि दी। 1500 में इन्होंने जांभोजी से मिलन हुआ तथा 1506 में इन्होंन जीवित समाधि ली। इनके प्रमुख ग्रंथों में सिंभूधड़ा व कोडां उल्लेखनीय है।

☛ **निम्न में से लालदास जी के बारे में असत्य कथन को पहचाने–**

(1) इनके माता-पिता का नाम चांदमल व समदा था।
(2) ये गुरु गद्दन चिश्ती से प्रेरणा लेकर धोलीदूब छोड़कर सिंह शिला पहाड़ पर कुटिया बनाकर रहने लगे।
(3) इनका प्रमुख काव्य ग्रन्थ 'लालदास जी की चेतावनियाँ' था।
(4) उपर्युक्त सभी सुसंगत है। (4)

☛ **संत हरिदास के बारे में सही कथन पहचानों?**

(1) संत हरिदास जी को 1513 में बोध (ज्ञान) प्राप्त हुआ।
(2) इन्होंने निर्गुण भक्ति पर जोर दिया।
(3) इनका देहान्त 1543 में डीड़वाणा में हुआ।
(4) सभी कथन सत्य है। (4)

☛ **संत दादू जी के बारे में सही युग्म का चयन करे–**

1. दादू के वृद्धानंद जी (बुड्ढ़न जी) से दीक्षा ग्रहण की व 1568 में सांभर में रहने लगे व धुनिया का कार्य किया।
2. 1575 ई. से दादू दयाल अपने 25 शिष्यों के साथ आमेर चले गये व 14 वर्ष तक वही रहे।
3. 1602 में ये फुलेरा के पास नरायणा आये व 1603 को इनका देहावसान हुआ।
4. इनके 152 शिष्य थे, जिसमें से प्रमुख 52 इनके 52 स्तम्भ कहलाए।

कूट (1) 1, 2 व 3 सही है। (2) 1, 3 व 4 सही है।
(3) 1, 2, 3 व 4 सही है। (4) केवल 1 व 4 सही है। (3)

व्याख्या–संत दादू दयाल के प्रमुख शिष्य–सुंदरदास जी, रज्जब जी, गरीबदास जी (पुत्र), मिस्किन जी (पुत्र), बखना जी, रज्जब जी, माधोदास जी आदि।

- दादू दयाल का प्रमुख ग्रन्थ–दादू दयाल री वाणी।

☛ **संत मावजी के बारे में असत्य कथन पहचाने–**

(1) मावजी के चौपड़े वाद-वाद शैली में लिखे हुए है, जो 5 बड़े ग्रन्थ है।
(2) चौपड़ा लेखन के कागज के लिये राशि लसाड़ा के पटेल ने दान की। धौलागढ़ में चौपड़ा की रचना की गई।
(3) चौपड़ा में छन्दों की संख्या 72 लाख 96 हजार है।
(4) सभी कथन सत्य है (4)

☛ **मीराबाई के बारे में सत्य कथन पहचाने–**

(1) मीराबाई के पिता बाजोली के जागीरदार रतनसिंह थे।
(2) उनका लालन पालन मेड़ता में हुआ। इनकी मृत्यु 1547 में डाकोर जी में हुई।
(3) मीरा जी की शक्ति 'कांता भाव' की थी।
(4) सभी सत्य है। (4)

☛ **रामस्नेही सम्प्रदाय से संबंधित सत्य कथन पहचाने–**

(1) रामकिशन जी का जन्म वैश्य कुल में बखतराम व देऊजी के घर हुआ।
(2) मूर्तिपूजको से परेशान हो ये कुहाड़ा गाँव में जाकर रहने लगे।
(3) शाहपुरा नरेश रणसिंह ने इनके लिये छतरी व मठ का निर्माण किया। 1798 में शाहपुरा में इनका निधन हुआ।
(4) सभी सत्य है। (4)

☛ **लालदासी संप्रदाय के प्रवर्तक थे।**

(1) पीपाजी (2) लालदासजी
(3) रामचरण जी (4) हरिराम जी (2)

व्याख्या–लालदासी संप्रदाय के प्रवर्तक लालदासी थे। ये मेव जाति के मुसलमान थे। लालदासजी का जन्म 1540 ई. (श्रावण कृष्ण पंचमी) में धोली दूब (अलवर) में हुआ था। इनकी मृत्यु नगला जहाज (भरतपुर) में हुई। नगला जहाज में इनकी प्रधान पीठ है लालदासजी ने मुस्लिम संत गद्दन चिश्ती से दीक्षा ली। लालदासजी की समाधि शेरपुर (अलवर) में है।

☛ **1585 ई. में फतेहपुर सीकरी में अकबर से मुलाकात करने वाले लोकसंत–**

(1) लालदासजी (2) दादूदयाल जी
(3) मीराबाई (4) पीपाजी (2)

व्याख्या–1585 ई. में संत दादूदयाल को अकबर ने धार्मिक चर्चा के लिये फतेहपुर सीकरी के इबादतखाना में बुलाया जहाँ दादूजी 40 दिन तक रूके थे।

☛ **निरंजनी संप्रदाय के प्रवर्तक कौन थे?**

(1) रामदासजी (2) संत हरिदासजी
(3) दादूदयाल जी (4) लालदासजी (2)

व्याख्या–निरंजनी संप्रदाय के प्रवर्तक संत हरिदासजी थे। इनका मूल नाम हरिसिंह सांखला था। इनको कलियुग का वाल्मिकी भी कहा जाता था।

- इनका जन्म नागौर जिले के कापडोद (डीडवाना) में 1455 ई. में हुआ। इनकी समाधि गाढ़ा नागौर में है जहाँ इनकी प्रमुख पीठ भी है।
- निरंजनी संप्रदाय में परमात्मा को अलख निरंजन या हरि निरंजन कहा जाता है।
- संत हरिदासजी के उपदेश मंत्र राजप्रकाश व हरि पुरुष जी की वाणी में है।
- **निरंजनी संप्रदाय के अनुयायी के दो प्रकार है–**
  1. **निहंग**–वैरागी जीवन जीने वाले अनुयायी
  2. **घरबारी**–गृहस्थ जीवन जीने वाले अनुयायी
- इनके बहनोई जींदराव खींची ने देवल चारणी की गाये चुराई थी। इन्हें छुड़ाने हेतु पाबुजी तीन फेरे लेने के पश्चात् चौथे फेरे में रवाना हुए। 1276 ई. में हुए संघर्ष में पाबुजी शहीद हुए।

☛ **गरीबदास जी, मिस्किनदास, सुन्दरदास, बखनाजी, रज्जब जी, माधोदास जी आदि किस सम्प्रदाय से जुड़े थे?**

(1) रामस्नेही संप्रदाय (2) निरंजनी संप्रदाय
(3) दादू संप्रदाय (4) लालदासी संप्रदाय (3)

व्याख्या–दादू संप्रदाय–इस संप्रदाय के प्रवर्तक दादूदयाल थे। दादूदयाल जी को मोतीलाल मेनारिया ने राजस्थान का कबीर भी कहा है। दादूदयाल जी का जन्म अहमदाबाद में 1544 ई. में हुआ था।

- दादू संप्रदाय को परब्रह्म संप्रदाय भी कहा जाता है।
- दादू संप्रदाय की प्रधान पीठ नरायणा (जयपुर) में है।
- दादू पंथ के सत्संग स्थल अलख दरीबा कहलाता है।
- दादूपंथ के अनुयायियों का अभिवादन शब्द सत्य राम है।

☛ **राजस्थान की राधा किसे कहा जाता है?**

(1) मीरा (2) गवरीबाई
(3) रमाबाई (4) गवरी देवी (1)

व्याख्या–मीराबाई को जहर देने और सर्प से कटवाने का प्रयत्न विक्रमादित्य द्वारा किया गया।

- मीरा महोत्सव चित्तौड़गढ़ में प्रतिवर्ष आश्विन पूर्णिमा को मनाया जाता है।

परीक्षा दृष्टि

★ जैसलमेर के भाटी राजपूत जिस देवी की पूजा करते हैं, वह है– **– आवड़ माता**

★ गायों की रक्षा में अपने प्राणोंत्सर्ग करने वालों में कौन प्रसिद्ध हैं– **– गोगाजी, तेजाजी, पाबूजी**

★ शाहपुरा (भीलवाड़ा) में जिस सम्प्रदाय की पीठ स्थित है– **– रामस्नेही सम्प्रदाय**

★ गोगाजी की स्मृति में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगा नवमी) को किस स्थान पर गोगाजी का मेला भरता है– **– गोगामेड़ी (नोहर)**

★ वह कौनसे लोकदेवता हैं जिसकी आराधना इसलिए की जाती है, क्योंकि गायों को छुड़वाने हेतु अपने जीवन की आहूति दी– **– तेजाजी**

★ राजस्थान में साम्प्रदायिक सद्भाव का सबसे बड़ा मेला कौनसा है– **– बाबा रामदेवजी का मेला**

★ मेवाड़ के मगरा क्षेत्र के भीलों के कालाजी हैं– **– केसरियानाथ जी ऋषभदेवजी, आदिनाथ जी**

★ राजस्थान का वह लोक देवता जिसने महमूद गजनवी से युद्ध किया? **– गोगाजी**

★ लोकदेवता गोगाजी का थान सामान्यत: किस पेड़ के नीचे बनाया जाता है– **– खेजड़ी**

★ हरभूजी ने किससे दीक्षा ली **–गुरू लालीनाथ जी से**

★ 'चितावनी' नामक ग्रंथ था– **–संत पीपा**

★ लोह पांगल नामक तांत्रिक का घमण्ड चकनाचूर करने वाले **–जसनाथजी**

★ अरजन व सुरजन नामक मौसेरे भाई के साथ संपति का विवाद चल रहा था **–गोगाजी**

★ किसने फिरोज तुगलक के मालवा के सूबेदार निजामुद्दीन की सेना को मार भगाया **–मल्लीनाथजी**

★ कौन उगमसी भाटी के शिष्य थे **–मल्लीनाथजी**

★ मेहाजी मांगलिया किसके समकालीन था **–राव चूण्डा के**
[राव रणगदेव भाटी से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।]

☛ **''रज्जब वाणी'' पुस्तक किस संप्रदाय से संबंधित है?**

(1) दादू संप्रदाय (2) विश्नोई संप्रदाय
(3) रामस्नेही संप्रदाय (4) निम्बार्क संप्रदाय (1)

☛ **लसाड़िया आंदोलन चलाने वाले लोकसंत थे?**

(1) संत मावजी (2) रानाबाई
(3) मीराबाई (4) गवरीबाई (1)

☛ **दादूदयाल जी के संबंध में सत्य कथन बताइये–**

(1) दादूदयाल के पार्थिव शरीर को 'भेराणा पहाड़ी' के नीचे दादू खोल नामक स्थान पर रख दिया।

(2) दादू ने ब्रह्म, जीव, जगत और मोक्ष पर अपने उपदेश सरल भाषा (सिद्धूकड़ी) में दिये।

(3) दादू पंथ की प्रमुख पीठ नरेना जयपुर में है तथा खालसा, खाकी, उत्तरादे, दादू पंथ की शाखाएँ है।

(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–नरायणा में भैराणा पहाड़ी की गुफा दादू खोल जहाँ पर दादू ने समाधि ली थी।

- दादूजी ने निपंख आंदोलन चलाया था।
- दादूपंथी के 5 प्रकार–1. खालसा, 2. खाकी, 3. नागा, 4. उत्तरादे तथा 5. विरक्त
- दादू पंथ के पाँच तीर्थ–कल्याणपुर, आमेर, साँभर, नरायणा, भैरांणा।

☛ **मीरावाई का जन्मस्थल कुड़की किस जिले में है?**

(1) चूरू (2) बूँदी

(3) पाली (4) चित्तौड़गढ़ (3)

व्याख्या–मीराबाई का जन्म 1448 ई. में कुडकी ग्राम में हुआ। कुडकी वर्तमान में ब्यावर जिले में है।

- मीराबाई का बचपन का नाम 'पेमल' था।
- मीराबाई को "राजस्थान की राधा" कहा जाता है।
- मीराबाई का विवाह 1516 ई. में चित्तौड़ के महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ था।
- मीराबाई ने वृंदावन में दास-दासी संप्रदाय की स्थापना की थी।

नोट– *19 नवीन जिलों के गठन के बाद अब कुड़की ब्यावर जिले में है।*

☛ **किस लोकसंत को उनके शिष्य कल्कि अवतार मानते थे?**

(1) संत मावजी (2) मीराबाई

(3) संत रानाबाई (4) दादूदयाल (1)

व्याख्या–संत मावजी के अनुयायी मावजी को विष्णु का दसवाँ अवतार कल्कि अवतार मानते हैं।

- संत मावजी का जन्म 1714 ई.-माघ शुक्ल पंचमी को साबला (डूँगरपुर) में हुआ था।
- संत मावजी को वागड़ का धनी कहा जाता है।
- संत मावजी ने लसाड़िया आंदोलन चलाया था व इन्होंने निष्कलंक संप्रदाय की स्थापना की थी।

☛ **संत मावजी के बारे में सत्य कथन बताइये?**

(1) 12 वर्ष की आयु में घर छोड़कर माही और सोम नदी के संगम पर एक गुफा में तपस्या करने लगे।

(2) मावजी के चौपड़े केवल दीपावली के दिन ही बाहर निकाले जाते हैं।

(3) इनका जन्म 1714 ई. में साबला गाँव में हुआ।

(4) उपर्युक्त सभी। (4)

व्याख्या–12 वर्ष की उम्र में घर छोड़कर माही व सोम नदी के संगम पर एक गुफा में तपस्या करने लगे थे। 1727 ई. में माघ शुक्ल एकादशी गुरूवार को इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। उसी दिन इन्होंने बेणेश्वर (वेण वृंदावन) धाम की स्थापना की।

☛ **राजस्थान की दूसरी 'मीरा' के नाम से किसको जाना जाता है?**

(1) राधा (2) रानाबाई

(3) गवरी बाई (4) दयाबाई (2)

व्याख्या–रानाबाई को राजस्थान की दूसरी मीराबाई के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म 1504 में हरनावा गाँव (नागौर) में हुआ। (वैशाख शुक्ल तृतीया)

- रानाबाई के गुरु का नाम चतुरदास था।

☛ **महिला संत राना बाई का मेला कब भरता है?**

(1) फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी

(2) फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी

(3) भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी

(4) भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी (1)

व्याख्या–1570 ई. फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी को रानाबाई ने हरनावा में जीवित समाधि ली।

☛ **रामस्नेही सम्प्रदाय से सम्बन्धित संत रामचरण जी के बचपन का नाम था–**

(1) रामकिशन (2) नरेन्द्र

(3) रामप्रकाश (4) रामदास (1)

व्याख्या–संत रामचरण के बचपन का नाम रामकिशन था। यह रामस्नेही संप्रदाय के शाहपुरा पीठ के संस्थापक थे।

- संत रामचरण जी का जन्म सोढ़ा ग्राम टोंक में हुआ।
- इनके गुरु गुदड़ संप्रदाय के संत कृपाराम थे। संत रामचरणजी ने शाहपुरा में 1760 ई. में रामस्नेही संप्रदाय की स्थापना की थी। इनके उपदेश अर्णभवाणी/अणभैवाणी में मिलते हैं।
- चैत्र शुक्ल एकम से चैत्र कृष्ण पंचमी तक रामस्नेही संप्रदाय का फूलडोल मेला लगता है।

☛ **निम्न कथन में असंगत है–**

संस्थापक	शाखा
(1) दरियावजी	रैण
(2) रामदासजी	खेडापा
(3) रामचरण जी	शाहपुरा
(4) रामकिशन	सिंहथल (4)

व्याख्या– *रामस्नेही संप्रदाय की राजस्थान में चार पीठ है–*

1. शाहपुरा (भीलवाड़ा) रामचरण जी
2. रैण (नागौर) दरियावजी
3. सिंहथल (बीकानेर) हरिरामदास जी
4. खेडापा (जोधपुर) रामदासजी

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए इमेज पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स Free डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स Free डाउनलोड करने का एकमात्र Google वेबसाइट :- *Rajasthanclasses.in*

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी 👇👇

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें 👇

Google

rajasthanclasses.in

Telegram चैनल ज्वॉइन करें

YouTube पर ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

Click Here : Get More PDF